Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 1 ~ Issue 4 (2013) pp: 57-58
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

देष के मृण षिल्पकारों का रचना संसार और सौन्दर्यबोध

डॉ. गगन बिहारी दाधीच
प्राध्यापक–चित्रकला
एस. एम. बी. राजकीय महाविद्यालय
नाथद्वारा (राजस्थान)

हमारे देश में सिन्धु घाटी सभ्यता से ही मृण कला का उद्भव माना गया है। मानव सभ्यता के विकसित रूप को दर्शाती इस सभ्यता के पुरावशेषो में मृण (माटी) से वने विविध रूप – आकार की कलाकृतियों के साथ ही माटी से बने आभूषण व मुद्राओ का खजाना मिला है। [1.]

सिन्धु घाटी सभ्यता के काल से लेकर वर्तमान समय की कला से जुड़े सेंकडौ कलाकार माटी को ही माध्यम बनाकर अपने रचना संसार को अभिव्यक्त कर रहे है। राजस्थान में गुजरात में ही नही बल्कि मध्यप्रदेश, उड़िसा, उत्तरप्रदेश, तमिलनाडु व दिल्ली में सृजनरत आधुनिक कलाकार भी माटी में रचना कर्म करके अपनी विशिष्ट पहचान बना चुके है। [2.]

शोध प्रपत्र के इस संदर्भ में यह जिक्र करना आवश्यक है कि आधुनिक कला जगत में माटी की कला को नवीन पहचान दिलाने वाले कला संस्थानो में बंगाल स्थित शान्ति निकेतन को प्रमुख है ही, उत्तर प्रदेश स्थित लखनऊ कला महाविद्यालय, बनारस महाविद्यालय एवं बडोदा, गुजरात स्थित एम.एस. विश्व विद्यालय के साथ ही जयपुर, राजस्थान स्थित महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट संस्थान प्रमुख है। इन संस्थानो मे कला विद्यार्थियों को माटी की कला में निहित सोन्दर्य बोध एवं उसके रचनात्मक बिम्बो से परिचित कराया जाता रहा है। [3.]

अध्ययन के इस क्रम में सर्वप्रथम देश के वरिष्ठ मृण शिल्पकार पद्म श्री से सम्मानीत हिम्मत शाह का जिक्र करें जिन्होने देश में ही नहीं, यूरोपीय कला जगत में भी अनपी रचनात्मक पहचान बनाई है। 22 जुलाई 1933 को गुजरात के भावनगर में जन्में हिम्मत शाह जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स, मुम्बई के साथ ही बड़ोदा स्थित एम.एस. विश्वविद्यालय के कला संकाय में अध्ययन कर कला कें रचना सोन्द्रर्य एवं उसमें निहित सामाजिक सरोकारो को समझा। [4.] बड़ोदा में कला अध्ययन के दौरान ही हिम्मत शाह का सर्म्पक वरिष्ठ कलाकार व प्राध्यापक एन.एस. बेन्द्रे एव के.जी. सुब्रहमणियम से हुआ। [5.] इसी दौरान हिम्मत शाह को फ्रांस सरकार की छात्र वृति मिली और उन्होने अपने पेरिस प्रवास के दौरान वहाँ के कई कलाकारो से संवाद स्थापीत किया और अपने कला बिम्बो को देशज् तत्वों के साथ – साथ अन्तराष्ट्रीय फलक पर विस्तारित किया।

फ्रांस आने के बाद हिम्मत शाह ने दिल्ली स्थित राष्ट्रीय ललित कला अकादमी के ''गढ़ी'' स्टुडियो को अपनी सृजन स्थली बनाया। ''गढ़ी स्टुडियो में प्रवास के दौरान उन्होने मानव की मुखाकृतियो को माटी में रूपांकित कर 6 –7 वर्षो में एक श्रृंखला की निर्मिति की। एक से दो फीट ऊंची मृण–मुखाकृतियों में उन्होने टाट, कपड़े, ताम्बा, लोहा व रस्सी आदि के प्रयोग से अपनी कला को मौलिक पहचान प्रदान की।

शोध प्रपत्र के इस क्रम में गुजरात की वरिष्ठ महिला कलाकार ज्योत्सना भट्ट की रचना प्रकिया को जानना जरूरी है। 6 मार्च 1940 को बड़ोदा में जन्म लेने वाली ज्योत्सना ने एम.एस. विश्वविद्यालय से कला शिक्षा ग्रहन की और चार दशक तक इसी कला संकाय में अध्यापन कार्य कर युवा कलाकारों को सृजनपरक प्रेरणा प्रदान की मृणशिल्प के साथ – साथ ज्योत्सना भट्ट ने सिरेमिक विद्या में भी अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। माटी से बनी तस्तरियों में जहाँ उन्होने प्राकृतिक व नैसर्गिक रूपाकारों को रचा तो सिरेमिक विद्या में उन्होने ''बिल्ली'' श्रृंखला के तहत उसके विविध भाव रूपों व आन्तरिक क्रियाओं को भी प्रमुखता से रूपांकित किया। [6.] सेवानिवृति के उपरान्त इस महिला कलाकार ने अपने घर पर ही स्टुडियों का निर्माण कर निरन्तर रचनाशील है।

मध्यप्रदेश के भोपाल मे सृजनरत निर्मला शर्मा ऐसी कलाकार हैं, जिन्होने औपचारिक कला शिक्षा के बिना मृण शिल्प एवं सिरेमिक कला क्षेत्र में अपनी सार्थक पहचान बनाई। 1945 में उत्तरप्रदेश के मोदी नगर में जन्म लेने वाली निर्मला शर्मा का प्रारंभिक प्रेरणा स्थल भोपाल स्थित '' भारत भवन '' रहा। [7.] भारत भवन में उन्होने प्रसिद्ध सिरेमिक कलाकार पी.आर. दरोज एवं युवा कलाकार देवीलाल पाटीदार के सान्निध्य में मृण कला की तकनीक को सीखा और

अपनी कला यात्रा की शुरूआत की। देश के विविध कला केन्द्रो पर अपनी मौलिक कलाकृतियों की प्रदर्शनियां आयोजित करने वाली निर्मला शर्मा की कलागत पहचान मुदभाण्डो पर काव्य भाव रचने के रूप में रही है। अपने हाथों से निर्मित मटकेनुमा आकारो पर कविताओं व अपने काव्य में विचारो को रूपांकित करती रही है। [8.]

राजस्थान में जयपुर निवासी अर्जुन प्रजापति के मृण व पाषाण शिल्पो की विश्व व्यापी पहचान रही है।जयपुर स्थित मूर्त्ति मुहल्ला में शिल्पकारों से प्रेरना लेने वाले अर्जुन प्रजापति का जन्म 9 अप्रेल 1957 को हुआ तथा इन्होने महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट्स से कला शिक्षा ग्रहण कर राजस्थान के कला जगत में सक्रिय हुए और अपनी विशिष्ट शैलीगत पहचान बनाई । पारम्परिक कलारूपों को नवीन रूप देने वाले अर्जुन प्रजापति को देश विदेश से कई सम्मान मिले है तथा 2010 में इन्हें कलाजगत में विशिष्ठ योगदान के लिये पदम श्री से अलंकृत किया गया। [9.] यर्थाथ परक शिल्प निर्मान कें लिये प्रसिद्ध इनकी पाषाण कलाकृति ''बनी ठनी'' का रूपांकन इस रूप में किया गया है कि घूंघट में राजस्थानी नारी का सौन्दर्य ने केवल पादर्शी दिखाई देता है अपितु फोटोजनिक प्रभाव को भी रेखांकित करता है।

देश भर में अपनी कलाकृतियों के माध्यम से विशिष्ठ पहचान बनाने वाले मध्यप्रदेश के देवीलाल पाटीदार का जन्म 12 जुलाई 1957 को खरगौन में हुआ तथा इन्होने इन्दौर स्थित कला महाविद्यालय से कला शिक्षा ग्रहण कर भोपाल को अपनी कार्य स्थलीय बनाया। [10.] वरिष्ठ कलाकार पी.आर. दरोज से प्रेरित पाटीदार ने माटी के साथ – साथ काष्ठ, पाषाण व धातु माध्यमों में कई प्रयोग किये एवं अपनी कला की निजी शैली को विकसित किया। आम जीवन के विषयों के साथ पाटीदार ने अपनी कला में सामाजिक सरोकारों को भी महत्ता प्रदान की। किसान का हल , दराती, हथोड़ा आदि रूपाकारों को इन्होने समकालीन सवेदनाओं से जोड़कर कलागत पहचान बनाई। इनकी कला रचनाओं में लोक व आदिवासी संस्कृति का प्रभाव तो है ही, आस – पास के परिवेश को भी इन्होने अपनी रचनाओ का आधार बनाया। [11.] चार दशक भारत भवन, भोपाल में मृण कला विभाग से जुड़े इस कलाकार ने देश विदेश में कई कला प्रदर्शनियों का आयोजन किया। शिल्प रचना के साथ – साथ इनकी अभिरूचि कला विषयक लेखन में भी रही हैं।

निष्कर्ष रूप में देखे तो समकालीन कला जगत में जितने भी शिल्पकार जुड़े रहे हैं उन सभी का प्रारंभिक कला माध्यम माटी ही रहा है। देश के कई वरिष्ठ व युवा कलाकारों ने माटी माध्यम में ही सृजन परक पहचान बनाकर कला धारा को आगे बढाया हैं।

संदर्भ –

1. सिन्हा, गायत्री, एवं अनरिजन्ड एक्ट ऑफ बीईंग, मेपिन पब्लिकेशन 2007, पृष्ठ 119
2. जुगनू, श्रीकृष्ण, लोक व पारम्परिक कलाओं का वैभव, स्वरसरिता वार्षिकी अंक, वाणीप्रकाशन जयपुर, 2010, पृष्ठ 13–14
3. गौतम, आर. बी, समकालीन कला और कलाकार, राजस्थान ललित कला अकादमी प्रकाशन, जयपुर, 2001, पृष्ठ 13, 14
4. सिंह, डॉ. अर्जुन कुमार, द आर्ट एंड लाइफ ऑफ हिम्मत शाह, पोथी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2008, पृष्ठ 44, 45
5. वहीं, पृष्ठ 67–72
6. विश्व कलाकोश, गुजरात साहित्य अकादमी, अहमदाबाद, 2002, पृष्ठ 9, 10
7. शुक्ल, प्रयाग, जनसत्ता वार्षिक अंक, नई दिल्ली, 2006, पृष्ठ 9, 10
8. भारद्वाज, विनोद, नई दुनिया, वार्षिकी, इंदौर, 2008, पृष्ठ 19–20
9. समकालीन कला, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, 2003, पृष्ठ 58
10. कलावार्त्ता, मध्यप्रदेश शासकीय प्रकाशन, भोपाल, 2008, पृष्ठ 17 से 22
11. वहीं, पृष्ठ 19

* Corresponding Author: डॉ. गगन बिहारी दाधीच